पाठ 16. बगुले की धूर्तता

पाठ का परिचय

यह कहानी धूर्तता के बुरे परिणाम दिखाती है। एक बार एक धूर्त बगुला था। वह बूढ़ा हो गया था। शिकार करना उसके लिए कठिन हो गया था। अपने भोजन की व्यवस्था का उसने एक दिन एक उपाय निकाला। वह तालाब के किनारे बैठकर रोते हुए तालाब की मछलियों व अन्य प्राणियों से बोला कि तालाब सूखने लगा है, इसलिए वे सब मारे जाएँगे। उसने कहा कि पास ही एक दूसरा तालाब है, जिसमें खूब पानी है, इसलिए वह मछलियों को एक-एक कर अपनी पीठ पर बैठाकर दूसरे तालाब में छोड़ आएगा। वे सब उसकी बातों में आ गए। इस प्रकार बगुला रोज़ कुछ मछलियों को दूसरी ओर ले जाकर अपना भोजन बनाने लगा। उसी तालाब में एक चतुर केकड़ा भी रहता था। उसे बगुले पर संदेह हुआ और उसने बगुले से बोला कि वह उसे भी दूसरे तालाब में छोड़ आए। बगुला खुश हो गया कि आज केकड़े को खाकर मुँह का स्वाद बदल जाएगा। ऊपर उड़ते समय केकड़े ने पूछा कि सब मछलियों को बगुला कहाँ छोड़ता है तो धूर्त बगुले ने उत्तर दिया कि अब स्वर्ग जाकर ही केकड़े को पता लगेगा। केकड़े ने तुरंत बगुले के पंख काटने शुरू कर दिए तो बगुला माफ़ी माँगने लगा। आखिर केकड़े ने उसे माफ़ कर दिया। बगुले को धूर्तता का परिणाम समझ में आ गया था। केकड़े ने तालाब पर पहुँचकर सबको यह बात बताई तो सबने उसे धन्यवाद दिया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

झूठ की उम्र लंबी नहीं होती। आज नहीं तो कल झूठ पकड़ा जाता है। झूठ बोलकर धूर्तता से दूसरों को मूर्ख नहीं बनाना चाहिए। दूसरों को कष्ट देकर जीने वाले लोगों का सुख-आराम कभी भी दुख और परेशानी में बदल सकता है।

पाठ का वाचन

- स्वयं आदर्श वाचन करते हुए पूरी कहानी पढ़ें।
- बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न कर यह जानें कि वे ध्यान से पढ़ रहे हैं या नहीं।
- अपने द्वारा पूरी कहानी पढ़ लेने पर बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ।
- बच्चों के उच्चारण पर ध्यान दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बगुले ने जिस प्रकार झूठ बोलकर मछलियों को फँसाया, क्या ऐसा करना सही है? सभी बच्चों के विचार इसपर जानें तथा निम्नलिखित प्रश्नों के माध्यम से कक्षा में चर्चा करें –

- क्या तुमने कभी किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए झूठ बोला है?
- क्या झूठ बोलकर प्राप्त की गई वस्तु तुम्हें खुशी दे पाई? अगर हाँ तो कब तक?
- क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जिसने बगुले की ही तरह झूठ बोलकर किसी को मूर्ख बनाकर कुछ प्राप्त किया हो?